IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

परमार मंदिर स्थापत्य: नवाचार एवं धार्मिक सहिष्णुता का एक समग्र अध्ययन

Nihal Kumar (Jaiswal)
M.A History

सारांश

यह शोध पत्र परमार वंश (9वीं–14वीं शताब्दी) के मंदिर स्थापत्य में नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता के समग्र विश्लेषण पर केंद्रित है। परमार शासकों, विशेषकर राजा भोज के काल में, मालवा क्षेत्र में एक अनूठी स्थापत्य परंपरा का विकास हुआ जो भूमिजा शैली की विशेषताओं के साथ धार्मिक बहुलवाद को दर्शाती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य परमार कालीन मंदिरों में स्थापत्य नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता के बीच संबंधों की खोज करना है। शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि परमार शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने न केवल विविध धर्मों के मंदिरों के निर्माण को प्रोत्साहित किया बल्कि स्थापत्य कला में भी महत्वपूर्ण तकनीकी और कलात्मक नवाचार लाए। यह अध्ययन मध्यकालीन भारत के सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मुख्य शब्द: परमार वंश, मंदिर स्थापत्य, समरांगण सूत्रधार, मालवा क्षेत्र, समरांगण सूत्रधार, भूमिजा शैली, धार्मिक सहिष्णुता, नवाचार के विशिष्ट पहलू, सांस्कृतिक प्रभाव

प्रस्तावना

परमार वंश मध्यकालीन भारत के सबसे प्रभावशाली राजवंशों में से एक है, जिसने 9वीं से 14वीं शताब्दी तक मुख्यतः मालवा (वर्तमान मध्य प्रदेश) और राजस्थान के कुछ भागों पर शासन किया। इस वंश के शासकों ने न केवल राजनीतिक और सैन्य क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल कीं, बल्कि कला, स्थापत्य, साहित्य और धर्म के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया। परमार वंश की राजधानियां धारा (धार) और चंद्रावती में स्थापित थीं, जहाँ से उन्होंने अपनी सांस्कृतिक और स्थापत्य परंपरा का विकास किया।

परमार वंश की स्थापत्य परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें स्थापत्य नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता का अद्वितीय संयोजन देखने को मिलता है। इस वंश के सबसे प्रतापी शासक राजा भोज (1010–1055 ईस्वी) ने न केवल राजनीतिक शक्ति का विस्तार किया बल्कि स्थापत्य शास्त्र में भी मौलिक योगदान दिया। उनके द्वारा रचित समरांगण सूत्रधार ग्रंथ मंदिर निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति का प्रमुख स्रोत है।[1]

मध्यकालीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता की परंपरा का गहरा प्रभाव स्थापत्य कला पर पड़ा है। गुप्त काल से ही भारतीय शासकों में विभिन्न धर्मों को संरक्षण देने की परंपरा रही है, और परमार शासकों ने इस परंपरा को न केवल जारी रखा बल्कि इसे और भी विस्तार दिया। उन्होंने हिंदू और जैन धर्मों के मंदिरों का निर्माण करवाया और इन सभी परंपराओं के कलाकारों और शिल्पकारों को संरक्षण प्रदान किया।

परमारों द्वारा निर्मित प्रमुख मंदिरों की सूची

मुख्य हिंदू मंदिर

मंदिर का नाम	**निर्माण काल**	**स्थान**	**निर्माणकर्ता शासक**	**मुख्य विशेषताएं**
भोजेश्वर मंदिर[2]	1010–1055 ई.	भोजपुर, मध्य प्रदेश	महाराजाधिराज भोज	विश्व के सबसे बड़े शिवलिंगों में से एक, अपूर्ण निर्माण, भूमिजा शैली का उत्कृष्ट नमूना
सरस्वती मंदिर/ विद्यालय[3]	1034 ई.	धार, मध्य प्रदेश	महाराजाधिराज भोज	शिक्षा केंद्र भोजशाला के नाम से प्रसिद्ध
उदयेश्वर मंदिर[4]	1059 ई.	उदयपुर, मध्य प्रदेश	उदयादित्य परमार	शिव मंदिर, भोज के उत्तराधिकारी का निर्माण
धारेश्वर महादेव[5]	11–12वीं शताब्दी	धार, मध्य प्रदेश	राजा मुंज	धारा की राजधानी का प्रमुख

[1] P. P. Apte and S. Apte, trans., Samarangana Sutradhara of Bhojadeva (Delhi: Indian Books and Periodicals, 2021)
[2] BHANDARI, SUKHSAMPATTIRAI. History of Malwa. English. Vol. 1. HISTORY PUBLISHING HOUSE AJMER & INDORE, p.p85.
[3] Ganguly, D. C. History of Parmar Dynasty of Malwa, pp 271
[4] Singh, Ameeta, and Uma Shanker. “Udaipur -The Epitome of Parmar Temple.” Scribd, n.d.
[5] https://dhar.nic.in/en/dhareshwar-temple/

				मंदिर
चौबारा डेरा-1[6]	11–12वीं शताब्दी	उण मध्य प्रदेश	विभिन्न परमार शासक	भगवान शिव को समर्पित सप्तरथ शैली

प्रमुख जैन मंदिर

मंदिर का नाम	**निर्माण काल**	**स्थान**	**संरक्षक/निर्माणकर्ता**	**मुख्य विशेषताएं**
चौबारा डेरा-2[7]	1185 ई.	उण, मध्य प्रदेश	विभिन्न परमार शासक	16 में तीर्थंकर श्री शांतिनाथ को समर्पित भूमिका शैली में बना
ग्वालेश्वर जैन मंदिर[8]	12वीं–13वीं शताब्दी	उण, मध्य प्रदेश	विभिन्न परमार शासक	विशाल प्रतिमाएँ परमार कालीन मण्डप, आज भी उपासना में प्रयोग
जैन मंदिर भोजपुर[9]	11–12वीं शताब्दी	भोजपुर	महाराजाधिराज भोज	महावीर की लगभग 20 फुट ऊँची विशाल मूर्ति दो मूर्तियाँ पार्श्वनाथ की

[6] "Un – a Paramara Temple Cosmopolis." Saurabh Saxena, September 19, 2023. Accessed September 2, 2025. https://puratattva.in/un-a-paramara-temple-cosmopolis/.

[7] Ibid.
[8] Ibid
[9] Ganguly, D. C. History of Parmar Dynasty of Malwa,pp 270

परमारों की स्थापत्य शैली

परमार वंश की स्थापत्य शैली में भूमिजा शैली की प्रमुखता देखी जाती है, जो उत्तर भारतीय नागर शैली का एक विशिष्ट और परिष्कृत रूप है। यह शैली परमार काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंची और बाद में पश्चिमी भारत की मंदिर स्थापत्य की प्रमुख विधा बनी।

भूमिजा शैली की मुख्य विशेषताएं

उदयेश्वर मंदिर उदयपुर, मध्य प्रदेश

भूमिजा शैली का उद्भव और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भूमिजा शैली का विकास नागर शैली की लाटिना शाखा से हुआ। प्रारंभिक नागर शिखर अपेक्षाकृत सरल, एकल-शिखर वाले थे, किंतु समय के साथ बहु-शिखर रूप विकसित हुआ और उससे शेखरी तथा भूमिजा जैसी जटिल शैलियाँ उत्पन्न हुईं[10]।

[10] Maulik Hajarnis & Bhagyajit Raval, “Evolution of Bhumija Shikhara and Distribution of Bhumija Shrines in India,” Chitrolekha International Magazine on Art and Design 6, no. 3 (2016): 17

"भूमिजा" शब्द का अर्थ संस्कृत व्युत्पत्ति से "भू से उत्पन्न" या "देशज" माना गया है, किंतु वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से "भूमि" का अर्थ मंज़िल अथवा तल है। इस प्रकार भूमिजा का तात्पर्य बहु-मंज़िली शिखर संरचना से है[11]।

भूमिजा शैली के उद्भव को सामान्यतः मालवा क्षेत्र (वर्तमान मध्यप्रदेश) माना जाता है, हालाँकि इसके प्रारंभिक उदाहरण गुजरात और राजस्थान में भी मिले हैं। समरांगणसूत्रधार (11वीं शताब्दी, राजा भोज द्वारा रचित) में भूमिजा शिखरों का अत्यंत विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें 16 भिन्न-भिन्न प्रकार बताए गए हैं[12]।

स्थापत्य विशेषताएँ

1. शिखर की संरचना

भूमिजा शिखर बहु-मंज़िली होते हैं, जिन्हें भूमि कहा जाता है। प्रत्येक भूमि पर छोटे-छोटे कुटशिखर स्तंभाकार पृष्ठभूमि पर रखे जाते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है मानो ऊर्ध्वाधर दिशा में विशाल मनकों की मालाएँ लटक रही हों[13]।

2. लता-पद्धति

भूमिजा शिखर चार लताओं से विभाजित होते हैं। इन लताओं के बीच क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर क्रम में छोटे-छोटे शिखरों की पंक्तियाँ होती हैं। ये प्रायः 3–5 कतारों में ऊर्ध्व और 5–9 कतारों में क्षैतिज रूप से व्यवस्थित रहते हैं।[14]

3. शुकनास और शूरसेनक

शिखर पर चैत्य-खिड़कियाँ प्रयोग की जाती हैं, जिन्हें शुकनास और शूरसेनक कहा जाता है। इनमें प्रायः शिल्पित मेडलियन बनाए जाते हैं, जो स्थापत्य को सौंदर्य और प्रतीकात्मकता प्रदान करते हैं।[15]

4. योजना प्रकार

भूमिजा मंदिर तीन मुख्य योजनाओं पर आधारित होते हैं:

चतुरश्र (Orthogonal / Square)

https://www.chitrolekha.com/V6/n3/03_bhumija_shrines.pdf

[11] Stella Kramrisch, The Hindu Temple, Vol. 1 (Calcutta: Motilal Banarsidass, 1976), 389.
[12] P. P. Apte and S. Apte, trans., Samarangana Sutradhara of Bhojadeva (Delhi: Indian Books and Periodicals, 2021)
[13] Stella
[14] Krishna Deva. Bhumija Temples, “Studies in Indian Temple Architecture”, (Ed.) Pramod Chandra, American Institute of Indian Studies, Varanasi, India, 1975, 90.
[15] Hajarnis & Raval, “Evolution of Bhumija Shikhara,” 19

वृत्त या स्तेललेट (Circular / Stellate)

अष्टभद्र (Eight-bhadra projections)

इन योजनाओं के आधार पर मंदिरों की दीवारें, कोने और शिखर के प्रक्षेप बनाए जाते थे[16]।

5. निरंधर योजना

भूमिजा मंदिर प्रायः निरंधर होते हैं, अर्थात इनमें प्रदक्षिणापथ नहीं होता। इसका कारण यह है कि शिखर की जटिलता और ऊर्ध्वाधरता के साथ प्रदक्षिणापथ का सामंजस्य कठिन माना गया था[17]।

6. शीर्ष भाग

शिखर के शिखरांश पर घंटा और आमलक रखा जाता है। भूमिजा में प्रयुक्त आमलक नागर शैली से भिन्न, विशेष प्रकार का होता है।

शिल्पशास्त्र और ग्रंथों में वर्णन

समरांगणसूत्रधार के 65वें अध्याय में भूमिजा शैली का विस्तार से वर्णन है। इसमें 201 श्लोक हैं, जिनमें विभिन्न भूमिजा प्रकारों के नियम दिए गए हैं[18]।

निषाध, मलयाचल, माल्यवान, नवमल्लिका – चतुर्भुज योजना के प्रकार।

कुमुद, कमल, कमलोद्भव, किरण – स्तेललेट प्रकार।

स्वस्तिक, वज्रवास्तिक, हरम्यतल, उदयाचल, गंधमादन – अष्टभद्र प्रकार[19]।

इनमें भाग विभाजन , परिवर्तन और अनुपात जैसे नियम अनिवार्य बताए गए हैं।

[16] Ibid.
[17] Ibid
[18] Pradipta Roy Choudhury, Aman Sharma, and Shiva Ji, “Reconstructing Bhumija Temple Architecture: A Modular Generative Computational Model Based on the Samarangana Sutradhara,” CAADRIA 2025 Proceedings 4 (2025): 317–18.
[19] Ibid.,318

धार्मिक सहिष्णुता और बहुदेवता पूजा का प्रभाव

परमार वंश की धार्मिक नीति में सहिष्णुता, समावेशिता और धार्मिक बहुलवाद के सिद्धांत केंद्रीय थे।
परमार शासकों में शैव धर्म की प्रधानता थी, लेकिन वे अन्य धर्मों के प्रति भी उदार थे।यह परंपरा भारतीय राजनीतिक परंपरा का एक अभिन्न अंग थी जहां विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को पूर्ण स्वतंत्रता और संरक्षण प्राप्त था।

जैन धर्म का संरक्षण और विकास:

परमार काल में जैन धर्म को विशेष संरक्षण प्राप्त था। इसके प्रमुख कारण थे:

- आर्थिक समृद्धि: जैन समुदाय के व्यापारी वर्ग का आर्थिक योगदान
- सांस्कृतिक मूल्य: अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों का सम्मान
- कलात्मक उत्कृष्टता: जैन मंदिरों में शिल्प कला की उच्च गुणवत्ता

ऊण मंदिर समूह इस संरक्षण का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है।

बौद्ध परंपरा का सम्मान:

यद्यपि परमार काल में बौद्ध धर्म का प्रभाव कम हो गया था, तथापि परमार शासकों ने बौद्ध स्मारकों का सम्मान किया और कुछ स्थानों पर बौद्ध स्तूपों और विहारों का जीर्णोद्धार भी करवाया। चंद्रावती में मिले बौद्ध अवशेष इस बात के प्रमाण हैं।

परमार मंदिरों में स्थापत्य नवाचार एवं धार्मिक सहिष्णुता का समग्र विश्लेषण

नवाचार और सहिष्णुता के बीच पारस्परिक संबंध

परमार काल में स्थापत्य नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता के बीच एक गहरा और पारस्परिक संबंध था। यह संबंध निम्नलिखित आयामों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है:

1. तकनीकी नवाचार में धार्मिक प्रभाव: विविध वास्तु परंपराओं का समन्वय: विभिन्न धर्मों की स्थापत्य परंपराओं से प्रेरणा लेकर नई तकनीकों का विकास
2. सामग्री और तकनीक में प्रयोग: जैन मंदिरों में संगमरमर की बारीक नक्काशी और हिंदू मंदिरों में पत्थर की विशाल संरचनाएं
3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: समरांगण सूत्रधार में वर्णित गणितीय और भौतिक सिद्धांतों का प्रयोग

कलात्मक संश्लेषण के आयाम:

धार्मिक सहिष्णुता के कारण परमार मंदिरों में कई कलात्मक परंपराओं का मिश्रण देखने को मिलता है:

- **मिश्रित शैली**: उत्तर भारतीय नागर शैली में दक्षिण भारतीय द्रविड़ तत्वों का समावेश
- **धार्मिक प्रतीकवाद:** हिंदू मंदिरों में जैन तीर्थंकरों की आकृतियां और जैन मंदिरों में हिंदू देवताओं के चिह्न
- **स्थानीय परंपराओं का एकीकरण:** राजस्थानी, मालवी और गुजराती कलात्मक परंपराओं का मंदिर कला में समावेश

सामाजिक-धार्मिक प्रभाव के व्यापक आयाम

समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव:

1. **धार्मिक सद्भावना का विकास:** विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना का विकास हुआ
2. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** मंदिर परिसर विभिन्न परंपराओं के बीच ज्ञान, कला और संस्कृति के आदान-प्रदान के केंद्र बने
3. **शिक्षा और ज्ञान का प्रसार:** मंदिरों में संचालित पाठशालाओं में विभिन्न धर्मों के ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी। भोज की राजधानी धारा में स्थित भोजशाला इसका प्रमुख उदाहरण है।

आर्थिक और सामाजिक विकास:

1. **व्यापार वृद्धि:** धार्मिक सहिष्णुता के कारण दूर-दराज के व्यापारी परमार राज्य में आकर व्यापार करते थे
2. **कारीगरी का विकास:** मंदिर निर्माण से पत्थर तराशने, मूर्ति निर्माण, और अन्य शिल्पकारी की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ
3. **तीर्थ पर्यटन:** बहुधर्मीय तीर्थ स्थलों के विकास से धार्मिक पर्यटन में वृद्धि हुई।

नवाचार के विशिष्ट पहलू

1. बहु-मंज़िली शिखर व्यवस्था (Multi-tiered Superstructure)

नागर शैली के सरल लाटिना शिखर को रूपांतरित करके भूमिजा में बहु-मंज़िली (भूमि) व्यवस्था दी गई।

प्रत्येक मंज़िल पर छोटे-छोटे शिखरों का पुनरावर्तन (repetition) हुआ, जिससे पूरा शिखर लयबद्ध और भव्य प्रतीत होता है।
यह ऊर्ध्वाधरता (verticality) को अधिक प्रभावशाली बनाने का नवीन प्रयास था।

2. ताराकार और अष्टभद्र योजना (Stellate & 8-bhadra Planforms)

चतुर्भुज योजना से आगे बढ़कर भूमिजा में ताराकार योजना और अष्टभद्र प्रक्षेप विकसित किए गए।

इनसे मंदिरों को अधिक ज्यामितीय जटिलता और सौंदर्य मिला।
यह नवाचार गणित और वास्तुकला का अद्भुत संयोजन है।

3. लता-पद्धति (Vertical Lata System)

शिखर को चार लताओं से बाँटा गया और इनके बीच छोटे-छोटे शिखरों की कतारें रखी गईं।

इससे शिखर में निरंतरता और एक सजावटी लय (decorative rhythm) बनी।
यह तकनीक केवल भूमिजा में पाई जाती है।

4. कुटशिखरों का आवर्तन (Repetition of Miniature Shikharas)

बड़े शिखर पर छोटे शिखरों का बार-बार प्रयोग किया गया।

दीर्घकालिक सांस्कृतिक प्रभाव

स्थापत्य शैली का प्रसार:
परमार काल में विकसित भूमिजा शैली का प्रभाव बाद में गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देता है। होयसल, चालुक्य और अन्य समकालीन राजवंशों ने भी इस शैली से प्रेरणा ली।

धार्मिक सहिष्णुता की परंपरा:

परमार शासकों की धार्मिक नीति ने बाद के शासकों के लिए एक मॉडल का काम किया। मुगल काल में भी इस परंपरा के तत्व देखे जा सकते हैं।

सांस्कृतिक निरंतरता:

परमार काल के सांस्कृतिक मूल्य आज भी राजस्थान और मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण

परमार स्थापत्य की तुलना समकालीन अन्य राजवंशों से करने पर कुछ विशिष्ट बातें सामने आती हैं:

- **चोल राजवंश से तुलना:**

चोल मंदिर मुख्यतः द्रविड़ शैली में निर्मित हुए जबकि परमार मंदिर भूमिजा शैली में
चोल मंदिरों में मुख्यतः शैव परंपरा है जबकि परमार मंदिरों में धार्मिक विविधता अधिक है।

- **पल्लव राजवंश से तुलना:**

पल्लव काल में भी धार्मिक सहिष्णुता थी लेकिन परमार काल में यह अधिक संस्थागत रूप में दिखाई देती है।

निष्कर्ष

परमार वंश के मंदिर स्थापत्य में नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता का यह व्यापक अध्ययन कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है जो मध्यकालीन भारतीय सभ्यता की समझ में मौलिक योगदान देते हैं।

मुख्य निष्कर्ष

स्थापत्य नवाचार की असाधारण उपलब्धियां:

परमार शासकों, विशेषकर महाराजाधिराज भोज के काल में स्थापत्य कला में जो नवाचार हुए, वे भारतीय मंदिर स्थापत्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुए। समरांगण सूत्रधार जैसे वैज्ञानिक ग्रंथों ने मंदिर निर्माण को एक कला से उठाकर विज्ञान के स्तर तक पहुंचा दिया।

धार्मिक सहिष्णुता का व्यापक प्रभाव:

परमार शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की नीति एक राजनीतिक रणनीति मात्र नहीं थी, बल्कि एक गहरी सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि का परिणाम थी। इस नीति ने न केवल राजनीतिक स्थिरता लाई बल्कि कलात्मक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास में भी अमूल्य योगदान दिया।

भूमिजा शैली का ऐतिहासिक महत्व:

परमार काल में विकसित भूमिजा शैली केवल एक स्थापत्य शैली नहीं थी, बल्कि एक सांस्कृतिक दर्शन का प्रतिबिंब थी। इस शैली में धार्मिक सहिष्णुता, तकनीकी उत्कृष्टता और कलात्मक परिष्कार का अद्वितीय संयोजन देखने को मिलता है।

सांस्कृतिक संश्लेषण का आदर्श:

हिंदू, जैन और बौद्ध परंपराओं का मंदिर कला में सफल एकीकरण परमार काल की एक विशिष्ट और अनुकरणीय उपलब्धि है।

ऐतिहासिक महत्व

यह अध्ययन मध्यकालीन भारत के सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक इतिहास की समझ में निम्नलिखित योगदान देता है:

राजनीतिक दर्शन की समझ:

परमार शासकों का राजनीतिक दर्शन धर्मनिरपेक्ष शासन के आधुनिक सिद्धांतों के निकट था, जो उस काल के लिए अत्यंत प्रगतिशील था।

सामाजिक एकीकरण का मॉडल:

विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का परमार मॉडल आज भी प्रासंगिक है।

कलात्मक परंपरा का विकास:

परमार काल में विकसित कलात्मक परंपरा ने भारतीय कला के विकास में दीर्घकालिक योगदान दिया।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

परमार काल की धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय की नीति आधुनिक भारत के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में जब धार्मिक विविधता और सामाजिक एकता के बीच संतुलन बनाने की चुनौती है, परमार काल के अनुभव से महत्वपूर्ण शिक्षा ली जा सकती है।

आज कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग (Computational Modelling) और फोटोग्रामेट्री (Photogrammetry) से भूमिजा मंदिरों का डिजिटल पुनर्निर्माण किया जा रहा है।

IIT हैदराबाद के शोधकर्ताओं ने Rhino-Grasshopper पर आधारित 3D मॉडल बनाकर यह दिखाया कि पारंपरिक शास्त्रों की ज्यामिति को आज भी आधुनिक तकनीक में लागू किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

- P. P. Apte and S. Apte, trans., Samarangana Sutradhara of Bhojadeva (Delhi: Indian Books and Periodicals, 2021)
- BHANDARI, SUKHSAMPATTIRAI. History of Malwa. English. Vol. 1. HISTORY PUBLISHING HOUSE AJMER & INDORE https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.35737/page/n34/mode/1up
- Ganguly, D. C. History of Parmar Dynasty of Malwa https://archive.org/details/history-of-parmar-dynasty-of-malwa-d.-c.-ganguly/page/269/mode/1up
- Singh, Ameeta, and Uma Shanker. "Udaipur -The Epitome of Parmar Temple." Scribd https://www.scribd.com/document/510532716/Udaipur-The-Epitome-of-Parmar-Temple
- "Un – a Paramara Temple Cosmopolis." Saurabh Saxena, September 19, 2023. Accessed September 2, 2025. https://puratattva.in/un-a-paramara-temple-cosmopolis/.
- Maulik Hajarnis & Bhagyajit Raval, "Evolution of Bhumija Shikhara and Distribution of Bhumija Shrines in India," Chitrolekha International Magazine on Art and Design 6, no. 3 (2016): 17 https://www.chitrolekha.com/V6/n3/03_bhumija_shrines.pdf
- Stella Kramrisch, The Hindu Temple, Vol. 1 (Calcutta: Motilal Banarsidass, 1976)
- Krishna Deva. Bhumija Temples, "Studies in Indian Temple Architecture", (Ed.) Pramod Chandra, American Institute of Indian Studies, Varanasi, India, 1975 https://zenodo.org/records/4287069
- Pradipta Roy Choudhury, Aman Sharma, and Shiva Ji, "Reconstructing Bhumija Temple Architecture: A Modular Generative Computational Model Based on the Samarangana Sutradhara," CAADRIA 2025 Proceedings 4 (2025) https://pr.iith.ac.in/newsletter/download/20/KID%2020240327.pdf
- Soundara Rajan, K.V. Indian Temple Styles, (New Delhi: Munshiram Manoharlal, 1972)
- Progress report of the Archaeological Survey Of India For The Group Of Temples At Un(Western Circle) , 1919 p.p 61-64
- Cunningham's Archeological Survey of India, Vol. VII
- Cunningham's Archaeological Survey of India, vol. X